Peer Reviewed

ISSN 2319-8648

Indexed (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Oct. 2022 Issue - 60 Vol. 1

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2319-8648

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Oct. 2022 Issue - 60 Vol. 1

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

Shaurya Publication , Latur

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 60 , Vol. 1	Peer Reviewed	ISSN : 2319 - 8648
Oct. 2022	SJIF	Impact Factor : 7.139

Present Preface Message

Honourable Prof.,

Here's a great pleasure to hand over this + research Journal title **'Current Global Reviewer'** At Present different papers are published through various branches of knowledge.But they are concerned to specific subject or thought. We are very glad in publishing this paper to get the more information about research to new learner about research in all the spheres. This is the age of supersonic. That is why we must concentrate at present at a large scale in higher education. It's very important in this modern phase for researchers and to encourage for the effort put by us. In the long run it will very useful for us as guide lines and directions.

'Current Global Reviewer' has been started to publish the research paper by great thinkers, intelligentia, scholars, lectures. Those who have contributed in the field of higher education and research for advanced knowledge. We are publishing research paper written in Marathi,Hindi& English, Languages. It has been inciuded research papers in language and literature, Social Science, Social work , commerce, Management, Law, Computer Science etc.

Hope you will remain in

Co- Operation in future

Thank You.

Editor In Chief

Mr. Arun B. Godam

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

57. लोकशाही : लोकशाहीसाठी आवश्यक परिस्थिती

    अनिल नारायणराव पंडित

58. भारतीय लोकशाही आणि हिंदू कोड बील

    सिमला बन्सीधर तुपसमिंद्रे

59. भारतीय लोकशाही व महिला

    उषा देवराव किरवले.

60. शास्वत विकास इक्कीसवीं सदी की नई चुनौतियां

    डॉ.कांबळे सुनील सोजरराव

61. 'खेळातील विकृत राजकारण रोखणे हे भारतीय लोकशाही समोरील एक आव्हान'

    Dr. Gunaji P. Nalge

62. भारतीय लोकशाही आणि समाज माध्यमे

    डॉ. जाधव बप्पा संभू, डॉ. संदीप चा. लोंढे

63. लोकशाही संवर्धनात विरोधी पक्षाची भूमिका

    प्रा. डॉ. सुरेश सखाराम भालेराव

64. भारतीय लोकशाहीसमोरील समकालीन आव्हाने

    प्रा. डॉ. सुखनंदन ढाले

65. भारतातील राजकीय पक्षांची भूमिका व लोकशाही -एक चिंतन

    डॉ. लोंढे संदीप गोविंदराव

66. भारतीय लोकशाहीचा तात्विक विचार

    बांगर परमेश्वर शिवाजी

Principal
Shivaji College, Hingoli
Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 60 , Vol. 1 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Oct. 2022 | SJIF | Impact Factor : 7.139

शास्वत विकास इक्कीसवीं सदी की नई चुनौतियां

डॉ.कांबळे सुनील सोजरराव
शिवाजी कॉलेज, हिंगोली

Abstract

भाषाई बाधाएं, सांस्कृतिक बाधाएं, मनोवैज्ञानिक बाधाएं और मानवशास्त्रीय बाधाएं और साथ ही प्रामकर्ताओं की सीमाएं विकास के फल को जनता तक पहुंचाने के अथक प्रयासों के बावजूद परिवर्तन प्रक्रिया को गति नहीं देने के पीछे प्रमुख कारक हैं। इन सभी कारणों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करना और समाधान सुझाना आवश्यक है। तभी सामाजिक-आर्थिक या सांस्कृतिक विकास की विभिन्न योजनाएं लाभार्थियों की श्रेणी में आ सकती हैं।

Keyword : शास्वत विकास ,

नई सहस्राब्दी में, नई सहस्राब्दी में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के कुशल उपयोग के आधार पर संतुलित विकास के लिए सतत विकास संवाद के सिद्धांत और व्यवहार दोनों की आवश्यकता है। भारत जैसे राष्ट्र में कृषि उद्योग और मानव विकास जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विकास के नए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए व्यापक सार्वजनिक शिक्षा की आवश्यकता है। मास मीडिया के माध्यम से उपलब्ध विकास साधनों का उपयोग करने के लिए गहन सार्वजनिक शिक्षा प्रदान की जा सकती है। पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण विकास के स्थापित प्रतिमानों को बदल रहे हैं जबकि नए वैकल्पिक विकास प्रतिमानों की पहुंच और उपलब्धता में वृद्धि कर रहे हैं जो सतत विकास संवाद के नए क्षेत्रों को बढ़ावा दे रहे हैं। इस संदर्भ में, भारतीय मूल्य दीवार को सचेत रूप से विकसित करने और विकसित करने की आवश्यकता है।

शास्वत विकास में प्रमुख बाधाएं

शास्वत विकास में, विकास संसाधनों का संरक्षण, संरक्षण और संरक्षण महत्वपूर्ण हैं। एक ओर, उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से बचना महत्वपूर्ण है और दूसरी ओर, उपकरणों के अधिक और कम उपयोग से बचना। हालांकि उस परंपरा के पीछे के कारणों का पता लगाया गया है, लेकिन इसके पीछे संचार अंतराल मुख्य कारण है।दिखाई पड़ना। जनता तक विकास का फल पहुंचाने के अथक प्रयासों के बावजूद परिवर्तन की प्रक्रिया तेज क्यों नहीं हो रही है? भाषाई बाधाएं, सांस्कृतिक बाधाएं, मनोवैज्ञानिक बाधाएं और मानवशास्त्रीय बाधाएं और साथ ही रिसीवर की सीमाएं इसके पीछे मुख्य कारक हैं। इन सभी कारणों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करना और समाधान सुझाना आवश्यक है। तभी सामाजिक-आर्थिक या सांस्कृतिक विकास की विभिन्न योजनाएं लाभार्थियों की श्रेणी में आ सकती हैं। साथ ही विकास के स्रोतों को विनाश से बचाया जाएगा।

शास्वत विकास की अनिवार्यता

विकास प्रणालियों को व्यवस्थित और योजना बनाते समय, विकास प्रणाली में तेजी लाना आवश्यक हो जाता है। विकास परियोजनाओं को हाथ में लेते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि पर्यावरण क्षतिग्रस्त या नष्ट न हो। संसाधन संरक्षण सतत विकास का एक मूलभूत पहलू है।

- पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न घटकों में उपकरणों के विवेकपूर्ण उपयोग पर जोर।
- विकासशील देश में समय। विकास प्रणालियों में कमी को दूर करने के लिए संसाधनों और वित्तीय क्षमता को कैसे बर्बाद नहीं किया जाना चाहिए, इस बारे में व्यापक जागरूकता पर जोर देना चाहिए।
- विकास योजनाओं पर राष्ट्रीयव्यय लाभकारी है या नहीं, इसकी निगरानी के लिए एक तंत्र होना चाहिए। विकास प्रशासन की गत्यात्मकता व्यवस्थाओं की गत्यात्मकता पर निर्भर करती है। इसलिए सतत विकास संवाद के लिए जनोन्मुखी शासन पर जोर दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार, पूर्व-नियोजन, संगठन, संसाधन की बचत, दूरदर्शिता और भविष्य के प्रावधान के साथ-साथ सूचना शिक्षा और संचार के त्रय पर आधारित सार्वजनिक शिक्षा सतत विकास संवाद के महत्वपूर्ण तत्व हैं।

समान वितरण के लिए विकेंद्रीकरण - एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि संसाधनों के समान वितरण के लिए संसाधनों का प्रभावी ढंग से विकेंद्रीकरण कैसे किया जाए। भारत जैसे ग्रामीण और कृषि प्रधान देश में ग्राम को कारक मानकर पंचायत राज्य व्यवस्था द्वारा विकास योजना बनाई जा रही है। विकास की नई दिशा गांव में प्रत्यक्ष निवेश और ग्राम स्तर पर विकास योजना में ग्राम सभा के बढ़ते महत्व से स्पष्ट है। यदि खेड़ी तालुका जिले और क्षेत्र का विकास संतुलित हो तो क्षेत्रीय पिछड़ेपन को कम किया जा सकता है। विकास कार्यक्रमों की योजना बनाते समय समन्वय और जुड़ाव पर जोर दिया जाना चाहिए। गरीबी उन्मूलन और न्याय का प्रवर्तन सतत विकास का उद्देश्य गरीबी उन्मूलन और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना है। हमारे ग्रामीण और कृषि प्रधान समाज में न केवल आम लोगों की क्रय शक्ति को बढ़ाया

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

जाएगा, बल्कि इसके लिए विकास प्रणाली को एक नई आधुनिक दृष्टि दी जानी चाहिए। महिलाओं और कमजोर वर्गों का सशक्तिकरण उन्हें संतुलन में विकसित करते हुए प्रक्रिया में शामिल होना चाहिए

नई चुनौतियां

हम समावेशी विकास के फोकस तक पहुंचने के एक नए महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं। सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक समानता नए युग की पुकार है। अगर गांव आत्मनिर्भर हो जाए तो राष्ट्र भी मजबूत बन सकता है। बलवान और कमजोर को यह समानता न केवल अवसर की बल्कि विकास की भी दी जानी चाहिए। इसके लिए सतत विकास का फॉर्मूला फायदेमंद हो सकता है। सूचना सीखने और संचार प्रतिमान का उपयुक्त अनुप्रयोग भविष्य के परिवर्तन का मंत्र हो सकता है

समारोप

इन सभी चर्चाओं से स्पष्ट है कि यदि भारतीय समाज की तस्वीर को पूरी तरह से बदलना है, तो विकास के मंत्र को मीडिया के उचित उपयोग से भारतीय समाज में प्रभावी ढंग से बिठाया जाना चाहिए। गरीब और शोषित लोग भविष्य के परिवर्तन का केंद्र बनने जा रहे हैं। इक्कीसवीं सदी में एक नया आदमी, एक नया विज्ञान प्रधान समाज और विकास की एक नई संस्कृति को विकसित किया जाना चाहिए। उसके लिए, भविष्य में, उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित इंटरनेट जैसे गतिशील माध्यम का निर्माण किया जाना चाहिए और एक नई उन्नत सोच का वातावरण बनाया जाना चाहिए। तभी भारतीय उपमहाद्वीप में प्रगति और समृद्धि का एक नया युग शुरू हो सकता.

संदर्भ

1. येडले गोविंद (संपादक) पर्यावरण संरक्षण :काळाची गरज ,मिसबाह प्रकाशन नांदेड, 2016
2. खंडगावे नामदेव, घटकार नारायण, पर्यावरण शिक्षण, अरुणा प्रकाशन, लातूर, 2007
3. आशा भराडीया, पर्यावरण शिक्षण, अरुणा प्रकाशन, लातूर, 2011
4. www.vikaspedia.com
5. www..marathivishwkosh.com

Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)